शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल
E ISSN 2320 – 0871
17 अप्रैल 2017

भारत भूषण अग्रवाल का काव्य-शिल्प

डॉ. ओम प्रकाश (हिंदी प्रवक्ता)
चंदौसी इंटर कॉलेज
चंदौसी, संभल, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कवि को अपनी कविता के प्रति ईमानदार होना चाहिये। ईमानदारी से तात्पर्य यह है कि अपने विचार, भावों और मान्यताओं को उसी रूप में कविता में अभिव्यक्त करना जैसे वे कवि के मन में उठते हैं। प्रसिद्ध कवि भारत भूषण अग्रवाल का यह कथन उनके दृष्टिकोण का परिचायक है। उन्होंने अपनी कविताओं में मध्यवर्गीय जीवन को अनूठे अंदाज में प्रस्तुत किया गया है। एक मध्यवर्गीय कवि के रूप में यह उनकी पहचान भी है। अपने परम्परागत संस्कार की बेड़ियों को काटकर मध्यवर्गीय मन की अपूर्व छटपटाहट को व्यक्त करना उनकी कविताओं की एक बहुत बड़ी विशेषता है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत भूषण अग्रवाल के काव्य शिल्प पर विचार किया गया है।

भूमिका

भावों की कलामयी संसृष्टि का नाम ही साहित्य या काव्य है। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार कह सकते हैं कि काव्य में भाव और कला इन दोनों पक्षों की समन्वय रहता है। भाव और कला पक्ष का सम्बन्ध क्रमशः अर्थ और शब्द से है। शब्द और अर्थ एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से जुड़े रहते हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा को चाँदनी से, माधुर्य को ईख से, मदिरा को मद से अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार शब्द और अर्थ को भी अलग-अलग नहीं किया जा सकता। हमारी काव्य परम्परा में ‘शब्दार्थो काव्यम्’ कहा गया। मम्मट ने उसे ‘तददोषौं शब्दार्थो सगुणवनलंकृति पुनः क्वापि।‘1 वक्रोक्तिकार कुन्तक ने शब्द अर्थ के वैचित्र्य को ही प्रधानता देते हुये काव्य को इस प्रकार परिभाषित किया है :

‘शब्दार्थो सहितौ वक्रकवि व्यापारशलिनी।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यंतद्विदाहलाद कारिणि’2

अर्थात कवि के वक्र व्यापार से युक्त काव्य कोविदों को आहलादित करने वाले व्यवस्थित रूप में नियोजित शब्द और अर्थ का सम्मिलित रूप ही काव्य है। व्याकरण दर्शन में कला और भाव पक्षों को ही क्रमशः शब्द और अर्थ की संज्ञा दी गयी है।

भारत भूषण अग्रवाल एक ऐसे कवि का नाम है जिसमें द्विवेदी युगीन राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, छायावाद के मनीषी, चिंतक और भाव प्रवण कवियों, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता का समन्वित रूप दिखायी देता है। भारत भूषण मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुये उनकी कविता मध्यवर्गीय मन का सच्चा चित्र प्रस्तुत करती है। मध्यवर्ग की पराजय, हताशा, नैराश्य, महत्वाकांक्षा, व्यंग्य, विद्रूप और थकान को भारत भूषण अग्रवाल ने आरम्भ से ही एक अनोखे अंदाज में प्रस्तुत किया।”3 वे मध्यवर्गीय मन की छुद्रता, स्वार्थपरता पर निर्भय व्यंग्य करते हैं। भारत जी कविता को अपनी जिन्दगी और अपने अनुभव के सन्दर्भ में देखते हैं।

वे काव्य के क्षेत्र में किसी प्रकार के फैशन को नहीं अपनाना चाहते। विशुद्ध नारेबाजी के रूप में

लिखी गई कवितायें भी उन्हें पसन्द नहीं। भारत जी की कविताओं में व्यंग्य के साथ-साथ आत्मव्यंग्य अधिक मिलता है। 'ओ अप्रस्तुत मन', 'अनुपस्थित लोग', और 'एक उठा हुआ हाथ' काव्य संग्रहों में प्रयुक्त व्यंग्य बेजोड़ हैं। भारत जी ने अपने काव्य में सामाजिक विसंगतियो पर उपहास किया है। उन्होंने अपने काव्य में कला और शिल्प के माध्यम से चमत्कार उपस्थित किया है।4

आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने तारसप्तक में प्रयोगवादी रचनाओं की चर्चा करते हुए लिखा था कि प्रयोगवादी रचनायें वैचित्र्य प्रिय हैं।5

भारत भूषण अग्रवाल का काव्य शिल्प

भारत भूषण अग्रवाल ने अपनी कविता में चमत्कार के कई ढंग अपनाये हैं। उन्होंने विराम चिह्नों के अत्यधिक विलक्षण प्रयोगों से कविता को नया तेवर देना चाहा है यथा -

हँसा हेम का प्रभात री।
सुरभि-मधुर-वात री!6

यहाँ 'सुरभि-मधुर-वात री' के बीच योजक चिन्ह तथा विस्मयबोधक चिन्ह, कविता में विस्मय उत्पन्न कर देता है। 'मुक्ति-2' में कवि ने गणित के अंको का कैसा सटीक प्रयोग किया है -

गाने की तबियत करती हो
जहाँ 6x4 के फर्श पर
असमर्थ साँसों की फुंफकार छोड़ता
मैं विक्षोभ में भरकर 7

यहाँ फर्श की लम्बाई, चौडाई, अंकगणितीय आधार पर कवि ने बताने का सफल प्रयोग किया है। वहीं 'टूटन' कविता में कवि गद्य कविता का रूप आबलिंग (/) चिह्न द्वारा तथा उपविराम, प्रश्नवाचक चिन्ह, उद्धरण चिह्न तथा विस्यम बोधक चिन्हों का प्रयोग बड़ी कुशलता के साथ करता है -

तभी पत्नी कह उठी! 'अरे' पगले!/ देखूँ टूटा-
कहाँ है ? यह देख, ठीक तो है 8

'अन्धों का गीत' कविता में कवि विस्मय बोधक चिन्ह (!) का प्रयोग बड़े ही विचित्र रूप में करते हैं -

हम तीनों अन्धे हैं!
हम तीनों अन्धे है!!
हम तीनों अन्धे है!!!9

इस कविता के अन्त में तीनों अन्धों की एक पंक्ति में विस्मय बोधक चिह्नों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली गयी है तथा अन्त में तीनों एक साथ विस्मय बोधक चिह्नों के साथ उच्चारण करते दिखाये हैं। 'कोट-सप्तक' की इन पक्तियों में कवि कोष्ठक चिन्ह {( )}का प्रयोग करके कविता में चमत्कार उत्पन्न करना चाहते हैं -

(भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे!)
और एक मेरे गुरूजी ने
(हाय उन्हें दक्षिणा कब दूँगा?)
एक कोट दिया है राष्ट्रपिता ने
(बोल, महात्मा गांधी की जय!) 10

नींव बदलो कविता में कवि ने रेखिका चिह्न (-) का बड़ी सफलता तथा कुशलता से प्रयोग किया है। जिसके कारण कविता में जीवंतता आ गयी है-

नींव- जिसकी मूल में है रक्त पीड़ित प्राणियों का
नींव-जिसकी बन्धनों में सार भूखी हड्डियों का
नींव- अत्याचार के बल से बनाई गई जो
नींव- जो लेती सहारा, क्रूरता का, रूढ़ियों का 11

इस कविता में लेखक ने रेखिका चिह्न द्वारा अत्याचार विरोधी स्वरों को रेखांकित किया है। गद्य कविता में एक विशेष प्रवृत्ति का भारत भूषण अग्रवाल ने प्रयोग किया है जो देखने में

कहानी लगती है परन्तु भाग चिह्न (/) से वाक्यों (पंक्ति) को विभाजित किया है यथा -

“हर बार यही होता है/ हर बार उम्मीदें बाँधी जाती हैं और वायदे किये जाते हैं/हर बार लगता है कि अब/”12

कवि ने इस प्रकार की कविता की श्रंखला में ‘चोट’, ‘आप मेरा क्या कर लेगें?’, ‘हर बार यही होता है’, ‘बंगाल का जादू’, ‘पतित पावनी’ को रखा जा सकता है। ‘चोर बाजार’ कविता में कवि ने नाटक के पात्रों की तरह अभिव्यक्ति करायी है।

चोर....अन्धकार में मेरा वास
मैं आ अकाल को लाता पास
मँहगाई मुझको चोर बाजार
अकाल....नफाखोर का लाड़ला, जनता को विकराल
महाप्रलय का रूप हूँ मेरा नाम अकाल 13

कवि ने कविता में शिल्प का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए अलग-अलग भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। ‘आग’ नामक कविता में कवि ने अंग्रेजी भाषा का सुन्दर प्रयोग किया है -

हॉट, प्लेट, हीटर, बुरशेन, गैस,
आयरन इलेक्ट्रिसिटी से
आजीवन घिरा हुआ
भूल ही गया था
कि आग किसे कहते हैं।14

कवि ने अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग से कविता में चमत्कार उत्पन्न करने के साथ आज की वैज्ञानिक जीवनचर्या का चित्रण किया है। ‘ताज से प्रश्न’ में संस्कृत के शब्दों के सुन्दर अंकन द्वारा कविता में रोचकता उत्पन्न की है -

ज्योत्स्ना सी आभामयि रूपसि,
करती थी जो भवन बिहार
ताज! बता भाया क्यो उसको
पाषाणों का शयनागार? 15

ज्योत्स्ना, आभाभयि, रूपसि, पाषाणों, शयनागार आदि संस्कृत भाषी शब्दों से कवि ने कविता में वैचित्र्य उत्पन्न किया है। भारत जी ने लोक भाषा के शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में किया किया है :

अरे आप ओढ़े या विछावे..., कमेटी-मार्का मिला सुराज
पहेली कमेटी बैठी भैया बटँवारे के लाय
टूक-टूक कर देश के, फूटे ढोल बजाय
कहें है शत्रु गयौ है भाज।16

‘अरे आप ओढ़े या विछावें’ कविता में कवि ने ग्रामीण अंचल के जैसे टूक-टूक, लाय, बजाय, गयौ है भाज आदि देशज शब्दों का प्रयोग करते हुए देश की आजादी के समय हुए बँटवारे का चित्र प्रस्तुत किया है।

विभिन्न भाषा के शब्दों से कविता में चमत्कार पैदा करने वाले कवि भारत जी ने गणितीय अंदाज में भी कविता को लिखा है। ‘इस जगत में हर्ष......’ कविता में कवि ने संख्या का अति सटीक प्रयोग किया है :

वर्ष बारह मास का है किन्तु
छुटिटयाँ बस तीन महिने, चार
इस जग में हर्ष का पल एक
और दुःख में तीन, टोटल चार 17

बारह, तीन, एक, चार आदि गणित की संख्या के प्रयोग के द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि जीवन में सुख के दिन जल्दी बीत जाते हैं इसलिए वे कम लगते हैं और दुःख के दिन जल्दी नहीं कटने के कारण अधिक प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार ‘सैंतालीस में शरणार्थी दल’ जो भारत जी की अधूरी कविता है, में उन्होंने सन का प्रयोग कुछ इस तरह भी किया है :

सैंतालीस में शरणार्थी दल
अड़तालीस में गाई थी धुन रघुपति राजाराम की

उन्चास में यूनेस्को से मिले अन्न के दान की
सन् पचास में देशी रजवाड़ों के समग्र
इक्यावन में सन्त विनोबा के महान भूदान की
बाबन में जन निर्वाचन के पहले अभियान की18

विभिन्न वर्षों की घटनाओं को कविता के रूप में प्रस्तुत करना भारत जी जैसे चमत्कारी कवि ही कर सकते हैं अन्य कोई नहीं। भारत जी नये-नये प्रयोगों के द्वारा अपनी कविता शिल्प में नयापन लाने में सक्षम रहे हैं। 'अपराजिता' कविता में कवि ने विश्व की अनेक नदियों को समाहित कर लिया है -

आज देती है सुनाई
पीत सागर की तरगों में
सीन, राइन, ऐल्ब, डैन्यूव, वोल्गा पार करती उमड़ती है
सिन्धु-सीक्या की विफलता में -19

कविता में सीन, राइन, ऐल्व, डैन्यूव, सिन्धु आदि सभी नदियों के नाम हैं। 'अगति-अगति' कविता में ब्रह्माण्ड में पाये जाने वाले प्राकृतिक वस्तुओं की उपमा दफ्तर की वस्तुओं से की है।

मेरा अपना लोक छोटा सही,
भिन्न है और सम्पूर्ण-
जहाँ फाइल सा आसमान फैला है
और सूरज पेपरवेट में ढल जाता है
वर्षा दवात
और ब्रज कलम है 20

फाइल की उपमा आसमान से, सूरज की पेपरवेट से, वर्षा की दवात से तथा ब्रज की उपमा कलम से की गई है। कविता में चमत्कार के नित नवीन प्रयोग करने में भारत जी बहुत कुशल कवि थे।

तानपुरा, लेकर वे करते थे साधना -
सासा रेरे गागा मामा पापा धाधा धाधना!21

इन पक्तियों में कवि ने संगीत की सरगम का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया है। कवि ने पहले प्रयुक्त न हुए अप्रस्तुत विधानों का प्रयोग किया है। बादल और बिजली के पारस्परिक सम्बन्धों की एक अनूठी छवि इन पक्तियों में मिलती है -

मार बिजली की कटारी मर गये बादल। 22

भारत जी ने अपनी कविताओं में ऐसे उपमानों का सुन्दर प्रयोग किया है जिनका प्रयोग पहले कभी नहीं हुआ। भारत जी की लिखी ये पक्तियाँ:

'मुर्ग छाप हीरो'
शुतुरमुर्गी वीरो!23

प्रस्तुत पक्तियों में हीरो और वीरो की उपमा मुर्ग व शुतुरमुर्ग से की गई है। कवि ने वैज्ञानिक उपमान का भी प्रयोग अपनी कविता में किया है:

कैमरे के लैंस सी है आँखे बुझी हुई
बिगडे कमबख्त लाउडस्पीकर से 24

भारत जी ने कविता में चमत्कार के लिए विचित्र लय, तुकबन्दी का प्रयोग भी अपने काव्य में किया है। जैसे निम्न पक्तियों में -

गाडियों की घरघराहट
साडियों की सरसराहट
नाडियों की हरहराहट 25

'कनाट प्लेस' कविता की ये पंक्तियाँ दिल्ली में स्थित कनाट प्लेस स्थान पर होने वाली भीड़-भाड़ का चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

भारत जी ने काव्य में छन्द विधान द्वारा भी शिल्प में सौन्दर्य उत्पन्न किया है। भारत जी ने परम्परागत छन्द, मिश्रित छंदों के साथ-साथ नवीन छन्दों व मुक्त छन्दों का भी प्रयोग अपनी कविताओं में किया है।

भारत जी के काव्य में मुक्त छन्द निश्चित लय को लेकर लिखे गये हैं। निश्चित लयादर्श में लिखी गई कविताओं में पंचमात्रिक, षट्मात्रिक,

सप्तमात्रिक लय दृष्टिगोचर होती है। उदाहरणार्थ फरमाइये । 7

क्या चाहिये ..7
श्रीमान् जी मन हमारे 7-7-2
जरा इतना तो बताइए 5, 7, 2
अब भला क्या और चाहिए 5, 7, 3 26

उपर्युक्त पक्तियों में क्रमशः सप्तमात्रिक व पंचमात्रिक छंदों के द्वारा कविता में प्रवाह व गतिशीलता उत्पन्न की गई है। इसके साथ कवि ने अंग्रेजी से प्रभावित छंदों को अत्मीयता व कुशलता के साथ स्वीकार किया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत जी ने कविता को प्रभावशाली बनाने व भावानुभूति में बाँधने के लिए अनेक विधानों, शब्दों, तुकांत-अतुकांत छन्दों का प्रयोग किया तथा काव्य में चमत्कार पैदा किया है।

सा सर्वविय्या शिल्पानां कलानां चोपनिबन्धनी।
तदवशाद्भिनिष्पन्नं सर्ववस्तु विभज्यंते ।।27

अर्थात संसार की समस्त विद्या शब्द प्रसूत है। समस्त शिल्प शास्त्र शब्दों का ही चमत्कार है। शब्द ही एक ऐसी महती शक्ति है जिसके सहारे संसार की समस्त वस्तुओं का विवेचन और विभाजन होता है। भाव पक्ष को वस्तु पक्ष भी कहते हैं और कला को अभिव्यंजना पक्ष। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार वस्तु विहीन अभिव्यंजना सर्वथा निरर्थक कही जायेगी। अतएव वस्तु रूप भाव पक्ष की अभिव्यंजना का प्रतीक रूप कला से नित्य सम्बन्ध मानने में कोई अनौचित्य नहीं होगा।"28

आधुनिक भारतीय आचार्य भी कला या अभिव्यक्ति का महत्व इस रूप में मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हैं कि "उपाख्या से प्रख्या चमक उठती है। किन्तु साथ ही वे अभिव्यक्ति को अन्ततः अनुभूति की अनुवर्तिनी दासी मानते हैं।"29 कुछ विद्वान विषय और उसकी अभिव्यक्ति को समान महत्व देने के पक्ष में हैं। "सुन्दर अभिव्यक्ति के बिना विषय पंगु रह जाता है और विषय के सौन्दर्य के बिना कला का सौन्दर्य खोखला है।"30 डॉ. दास गुप्त महोदय प्राचीन भारतीय कला दृष्टि को समझाते हुए लिखते हैं - "कला-विषय और कलाकार में आरम्भ में पूर्ण एकतानता स्थापित हो जाती है। किन्तु जब तक कलाकार का मानस चित्र बाहर व्यक्त नहीं होता, तब तक कला निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण नहीं होती। कलापक्ष की प्राप्ति के लिए आन्तरिक अनुभूति की बाह्य अभिव्यक्ति अनिवार्य है।"31

डॉ. नगेन्द्र ने क्रोचे के पक्ष को सूत्र रूप में रखते हुये लिखा है कि क्रोचे के अनुसार "कला मूलतः सहजानुभूति है जो अभिव्यक्ति से अभिन्न है। कला का मूल रूप कलाकार के मानस में घटित होता है- रंग रेखा, शब्द, लय आदि में उसका अनुकरण सर्वथा आनुषंगिक घटना है।32 भारतीय काव्य शास्त्र के अन्तर्गत काव्य के कलापक्ष की सूक्ष्म विवेचना की गयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. काव्य प्रकाश, मम्मट
2. वक्रोक्ति जीवितम्, कुन्तक 1/7
3. भारत भूषण अग्रवाल: कुछ यादें कुछ चर्चाएँ, बिन्दु अग्रवाल, पृष्ठ- 18
4. भारत भूषण अग्रवाल: कुछ यादें कुछ चर्चाएें, बिन्दु अग्रवाल, पृष्ठ - 18
5. नई कविता, डॉ. कान्ति कुमार, पृष्ठ- 157
6. भारत भूषण अग्रवाल रचनावली खण्ड-1, बिन्दु अग्रवाल, पृष्ठ- 10
7 वही, पृष्ठ- 358
8. वही, पृष्ठ- 414
9. वही, पृष्ठ- 321

10. वही, पृष्ठ- 435

11. वही, पृष्ठ- 203

12. वही, पृष्ठ- 464

13. वही, पृष्ठ- 269

14 वही, पृष्ठ- 426

15. वही, पृष्ठ- 42

16. वही, पृष्ठ- 217

17. वही, पृष्ठ- 242

18. वही, पृष्ठ- 565

19. वही, पृष्ठ- 212

20. वही, पृष्ठ- 413

21. वही, पृष्ठ- 504

22. वही, पृष्ठ- 266

23. वही, पृष्ठ- 541

24. वही, पृष्ठ- 85

25. वही, पृष्ठ- 341

26. अनुपस्थित लोग, भारत भूषण अग्रवाल, पृष्ठ- 50

27. वाक्यपदीय-1, पृष्ठ- 124

28. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्वान्त (प्रथम भाग), गोविन्द त्रिगुणायत, एस. चन्द्र एण्ड कं. प्रा. लि. रामनगर, नई दिल्ली, पृष्ठ- 55

29 भारतीय साहित्य शास्त्र, बल्देव उपाध्याय, पृष्ठ- 451

30. सिद्वान्त और अध्ययन, बाबू गुलाबराय, पृष्ठ- 276

31 The Hindu viwe held that though in the preliminary state the artist must be unified in a state of trance yet it is only when the internal picture can be formed The inner representation must be transported outside. Fundamentals of Indian Art-1954 Page- 93

32. अरस्तु का काव्यशास्त्र: भूमि का भाग, पृष्ठ- 13